बुन्देलखण्ड : सांस्कृतिक वैभव

डॉ. रंजना मिश्रा

Scanned with OKEN Scanner

डॉ. रंजना मिश्रा

जन्म : 29 नवम्बर 1961

स्थान : सागर, मध्य प्रदेश

शिक्षा : 1983 में डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर म.प्र. से एम.ए. उपाधि। 02 जून 1987 को डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर से शोध-उपाधि प्राप्त

प्रकाशन : साहित्य : समकालीन सरोकार विषय पर पुस्तक प्रकाशन, राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं एवं पुस्तकों ईसुरी, रिसर्च लिंक-इन्दौर, रिसर्च जर्नल-रीवा, नवीन शोध संसार-नीमच, साहित्य सरस्वती-सागर, समकालीन भारतीय समाज में अपराध- डॉ. अखिलेश शुक्ल, भारत में नगरीय समाज- डॉ. बृजकिशोर शुक्ल, में समय-समय पर लेखों का प्रकाशन

परियोजना कार्य (प्रोजेक्ट) : विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (U.G.C.) द्वारा प्रदत्त 'बुन्देली शब्द सम्पदा एवं उसके विविध स्त्रोत' विषय पर परियोजना कार्य।

सम्प्रति : 01 जनवरी 1987 से महाविद्यालयीन सेवा में। वर्तमान में शासकीय कला एवं वाणिज्य 'अग्रणी' महाविद्यालय सागर में पदस्थ।

सम्पर्क : HIG-71 दीनदयाल नगर, मकरोनिया, सागर, (म.प्र.) मोबाइल - 8959835644

ई-मेल: ranjanamishra206@gmail.com

Scanned with OKEN Scanner

अनुज्ञा

वैधानिक चेतावनी
पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन - फोटो कापी, इलेक्ट्रानिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक / प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। किसी भी विवाद के लिए न्यायालय दिल्ली ही मान्य होगा।

© लेखक

प्रथम संस्करण : 2016

ISBN 978-93-83962-40-2

प्रकाशक
अनुज्ञा बुक्स
1/10206, वेस्ट गोरख पार्क
शाहदरा, दिल्ली-110 032
फोन : 011-22825424, 09350809192
email: anuugyabooks@gmail.com

मूल्य : 500.00 रुपये

आवरण : मुन्ना कुमार

मुद्रक
अर्पित एण्टरप्राइजेज, दिल्ली-32

BUNDELKHAND : SANSKRITIK VAIBHAV *by* Dr. Ranjana Mishra

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रम

	भूमिका	5
	पुरोवाक्	7
अध्याय – एक	स्वर्णिम इतिहास	11
अध्याय – दो	भाषा और साहित्य	19
अध्याय – तीन	व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवनचर्या	47
अध्याय – चार	कृषि की प्रधानता	91
अध्याय – पाँच	औद्योगिक उन्मेष	113
अध्याय – छह	सामूहिक उत्सव	141
अध्याय – सात	संस्कार और त्यौहार	161
अध्याय – आठ	उन्नत सांस्कृतिक जीवन	185

Scanned with OKEN Scanner

पश्चिमी हिन्दी के भी अनेक रूप हैं जिनमें चार मुख्य हैं और इन चारों में से बुन्देली ज्येष्ठ एवं श्रेष्ठ है। शेष खड़ी बोली, ब्रज और कन्नौजी है। इस प्रकार बुन्देली शौरसेनी प्राकृत की प्रपौत्री, तथा शौरसेनी-अपभ्रंश की पौत्री तथा पश्चिमी - हिन्दी की पुत्री के रूप में राष्ट्रभाषा से सम्बन्धित है। खड़ी बोली, ब्रजभाषा और कन्नौजी उसकी सगी बहनें हैं।

बुन्देली ने पश्चिमी हिन्दी की पुत्री होने के नाते सबसे अधिक विशेषता आनुवांशिक रूप में शौरसेनी प्राकृत, शौरसेनी अपभ्रंश तथा पश्चिमी हिन्दी से ग्रहण की है।

– इसी पुस्तक से

Scanned with OKEN Scanner

रे मन साहसी साहस राख, सुसाहस सौं सब जेर फिरैंगे।
त्यों पद्माकर या सुख में दुख, त्यों दुख में सुख सेर फिरैंगे।
वैसे ही वेणु बजावत स्याम, सुनाम हमारो हू टेंट फिरैंगे।
एक दिना नहिं एक दिना, कबहूँ फिर वे दिन फेर फिरैंगे।

– पद्माकर

अनुज्ञा बुक्स
दिल्ली-110032

₹ 500
9 789383 962402

Scanned with OKEN Scanner